ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 321-324

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ एवं उनके वैश्विक प्रदेय

राज कुमार

शोध अध्येता– शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-17.09.2022, Revised-22.09.2022, Accepted-28.09.2022 E-mail: raj95292@gmail.com

सारांशः – *वेद भारतीय ऋषियों, मनीषियों द्वारा संकलित विश्व के महानतम् एवं प्राचीनतम् ग्रंथ हैं। भारतीय शिक्षा का मूल दर्शन भारतवर्ष के नाम में ही निहित है। 'रत' शब्द में 'भा' उपसर्ग लगाने से 'भारत' बना है, जिसमें 'भा' का अर्थ है प्रकाश तथा 'रत' का अर्थ है रत रहना अथवा तल्लीन रहना अर्थात जो प्रकाश में रत हो, वही भारत है।*

भारत की धरती प्राचीन काल से ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, कृष्ण, शंकर, गौतम बुद्ध, महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ जैसे योगी, संत, महापुरुषों की धरती रही है, जिन्होंने अपने ज्ञान, कला, कौशल से सम्पूर्ण धरा–धाम को अभिसिंचित करने का कार्य किया। सभ्यता के उषाकाल में ही भारत के योगियों, संतों, महापुरुषों ने ज्ञान के महत्व को समझ लिया था और उन्होंने भारत की ज्ञान परम्परा को गौरवान्वित कर उसे सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया। समय–समय पर इन संतों, योगियों, ऋषियों–मुनियों, मनीषियों एवं महापुरुषों ने अनेक पंथ अथवा सम्प्रदायों का प्रतिपादन कर मानवता का एक नया संदेश देने का कार्य किया, जिससे भारत धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में इतनी प्रगति की कि वह ''विश्व गुरू'' बन गया तथा भौतिक क्षेत्र में इतनी प्रगति की कि वह ''सोने की चिड़िया'' कहा जाने लगा। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान एफ0डब्ल्यू0 थामस लिखते हैं कि –''संसार का कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में हुआ हो जितना कि भारत में या जिसने इतना स्थाई और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो, जितना कि भारत ने।''

कुंजीभूत शब्द– मनीषियों, संकलित, प्राचीनतम् ग्रंथ, उपसर्ग, प्राचीन काल, महायोगी, महापुरुषों, कला, कौशल।

कालांतर में भारतवर्ष में अनेक पंथ, परम्पराओं, सम्प्रदायों का विकास हुआ। एक ही धर्म के अन्दर अलग–अलग परम्परा या विचारधारा मानने वाले वर्गों को सम्प्रदाय कहते हैं। सम्प्रदाय के अन्दर गुरू शिष्य परम्परा चलती है, जो गुरू द्वारा प्रतिपादित परम्परा को पुष्ट करती है। प्राचीन काल से ही भारतीय सामाजिक–शैक्षिक व्यवस्था में विभिन्न सम्प्रदायों जैसे श्वेतांबर, दिगंबर, हीनयान, महायान, वैष्णव, नाथ सम्प्रदाय आदि का अपना योगदान रहा है। भारतीय सामाजिक–शैक्षिक व्यवस्था एवं योग के क्षेत्र में नाथ सम्प्रदाय का अतुलनीय योगदान रहा है। विभिन्न सम्प्रदायों के योगदानों को दृष्टिगत रखते हुए नाथ सम्प्रदाय एवं उसके प्रवर्तक एवं उनके वैश्विक प्रदेय का अध्ययन करना अति आवश्यक है।

नाथ सम्प्रदाय– नाथ सम्प्रदाय उन योगियों, साधुओं, साधकों, गृहस्थों आदि का सम्प्रदाय है, जो नामांत में नाथ या योगी उपाधि जोड़ते हैं। ये सम्पूर्ण समाज में सामाजिक समरसता से समता, समानता, बन्धुता, देश प्रेम व राष्ट्र चिंतन का संदेश देने एवं उसे एक एकता के सूत्र में नाथने अर्थात् पिरोने या बांधने के उद्देश्य से गांव–गांव, नगर–नगर घूमते अर्थात् अलख जगाते रहते हैं।

नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथः नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक को लेकर जनमानस में दो प्रकार के दृष्टिकोण हैं – पहला पौराणिक तथा दूसरा ऐतिहासिक। पौराणिक दृष्टिकोण के अनुसार नाथ सम्प्रदाय के प्रथम प्रवर्तक[2], प्रथम नाथ[3], आदि[4] और दिव्य गुरू[5] आदिनाथ अर्थात् भगवान भोलेनाथ या शिवनाथ माने जाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अनुसार नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक को लेकर इतिहासकारों, साहित्यकारों में कुछ मतभेद है। कुछ इतिहासकार, साहित्यकार और विश्लेषक जैसे एस0के0 पाण्डेय[6] आदि मत्स्येन्द्रनाथ को नाथ सम्प्रदाय का प्रवर्तक मानते हैं, तो त्रिपाठी[7] सिंह[8] गुप्त[9] आदि गोरक्षनाथ को। लेकिन नाथ सम्प्रदाय का वास्तविक प्रवर्तक कौन है, का पता लगाने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सम्बन्धित निम्नलिखित मतों का अध्ययन किया जा सकता है –

1. जयशंकर मिश्र के अनुसार[10] – नाथ सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार मत्स्येन्द्रनाथ ने किया था।
2. शुक्ल एवं त्रिपाठी के अनुसार[11] – नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक मुख्य रूप से गोरक्षनाथ माने जाते हैं।
3. बेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश शासन के अनुसार[12] – गोरक्षनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य और नाथ साहित्य एवं सम्प्रदाय के आरम्भकर्ता माने जाते हैं।
4. नाथ सम्प्रदाय के महागुरू एवं गोरक्षपीठाधीश्वर और मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, योगी आदित्यनाथ के अनुसार[13] – नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ जी हैं।
5. गोरक्षसिद्धान्त संग्रह में मार्ग के प्रवर्तकों के नाम इस प्रकार गिनाए गए हैं[14] – नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ।
6. इटली के विद्वान एल0पी0 टेसिटरी ने गोरक्षनाथ को नाथ सम्प्रदाय का अधिष्ठाता स्वीकार किया है।[15]
7. इंदु पाण्डेय ने बताया कि गोरखनाथ वज्रयानियों वीभत्स और अश्लील विधानों से अलग नाथ पंथ चलाया था।[16]
8. शहीदुल्ला के अनुसार[17] – नाथ पंथ के संस्थापक गोरक्षनाथ जी है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

9. उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो0 ईश्वरशरण विश्वकर्मा के अनुसार[18] – नाथ परम्परा में नौ नाथ मान्य हैं, जिन्होंने नाथ सम्प्रदाय के मार्ग का प्रवर्तन किया, किन्तु इन सब में गोरखनाथ को ही नाथ सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।

10. फूलचन्द प्रसाद गुप्त के शब्दों में[19] – गुरू गोरखनाथ जी हठयोग के प्रेणता, नाथपंथ के प्रवर्तक और सद्साहित्य के सर्जक थे।

उपरोक्त मतों के विवेचन से स्पष्ट है कि दोनों महापुरुषों ने नाथ सम्प्रदाय के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया था। 10वीं20 शताब्दी के प्रारम्भ में 'मत्स्येन्द्रनाथ ने जो साधना पद्धति विकसित की वह वज्रयानी बौद्ध सिद्धों की साधना पद्धति से साम्य खाने लगी'[21] जो पहले से ही पंचमकार में डूबी हुई थी, जिसका नाथ सिद्ध पहले से ही विरोध करते चले आ रहे थे[22], इसीलिए गोरक्षनाथ ने मत्स्येन्द्रनाथ में नवीन चेतना का संचार करते हुए कहते हैं कि 'चेत मछंदर गोरख आया', 'जाग मछंदर गोरख आया'।[23] यही कारण है कि राव[24] आदि नाथ सम्प्रदाय के विश्लेषकों ने यह स्वीकार किया है कि नाथ सम्प्रदाय एक ऐसा सम्प्रदाय है, जहाँ शिष्य भी गुरू का मार्गदर्शन करते हैं। इस प्रकार गोरक्षनाथ ने मत्स्येंन्द्रनाथ के कतिपय मतों का खंडन करते हुए पूर्ण ब्रह्म एवं ब्रह्मचर्य का समर्थन किया और एक नवीन साधना पद्धति का प्रवर्तन करते हुए एक नई संकल्पना विकसित की, जो पूर्णतः योगाधारित थी।[25] वह पूर्ण ब्रह्म का समर्थन करते हुए कहते है कि ईश्वर द्वैत–अद्वैत से परे विलक्षण तत्वों वाला है अर्थात् द्वैताद्वैतविलक्षण तत्वों वाला है, जो आदिनाथ शिव के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है।

जब उसे सृष्टि की रचना करनी होती है तो वह परम् शिव में लीन होकर शक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है और सृष्टि की रचना करता है। यह सब प्रक्रिया योग के अन्तर्गत चलती है।[26] इसी आधार पर गोरक्षनाथ ने नाथ सम्प्रदाय की संकल्पना का प्रतिपादन किया था। कबीर गोरख की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि "ऐसा भगत भया भू ऊपर, गुरू पर राज छुड़ाया"[27] प्रायः जनमानस में यह धारणा रहती है कि ईश्वर एक है, की अवधारणा को सिद्ध करके गोरक्षनाथ जी एक सिद्ध महायोगी के रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे अन्तस्साधना पर बल देते हुए कहते हैं कि –"अलख–निरंजन स्वसंवेद्य परम् शिव अपने ही भीतर है। यही परम् देव है, यही आत्तम देव है। बाह्य साधना में भटकते रहने से स्वरूप बोध की प्राप्ति नहीं हो सकती है।"[28] नाथ सम्प्रदाय के उद्भव काल से लेकर अब तक यही संकल्पना चलती आ रही है। इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नाथ सम्प्रदाय के वास्तविक प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ जी हैं।

वैश्विक प्रदेय नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ ने सामाजिक–शैक्षिक तथा योग के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व की मानवता को अतुलनीय योगदान दिया है, जिसे वैश्विक प्रदेय के रूप में देखा जा सकता है।

सामाजिक क्षेत्र में नाथ योगी ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, वाह्य आडम्बर, धर्म–जाति, ऊँच–नीच, भेद–भाव आदि सामाजिक कुरीतियों पर सबसे प्रबल प्रहार करके विश्व की मानवता को समाजिक समरसता से समता, समानता, एकता–अखण्डता तथा विश्व बन्धुत्व का संदेश दिया, जो आज भी प्रासंगिक है।

शैक्षिक क्षेत्र में नाथ सम्प्रदाय की शिक्षा व्यवस्था को भारत की सनातन संस्कृति के आदर्शतम् स्वरूप में देखा जा सकता है, जिसे वैदिक तथा बौद्ध कालीन शिक्षा में व्यापक सुधार के रूप में भी देखा जा सकता है। नाथ योगियों ने अपने अनुभवजन्य एवं योगजन्य ज्ञान से साधारण जनमानस के मर्म को जान लिया था। उनके सदियों से बन्द पड़े शिक्षा के द्वार को हमेशा–हमेशा के लिए खोल दिया। महायोगी गोरक्षनाथ जी जनसंदेश देते हुए कहते हैं कि – "जब सभी जन एक नाथ आदिनाथ की संतान है तो किसी के साथ धर्म, जाति, वर्ग, समुदाय एवं शारीरिक अक्षमता आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं किया जा सकता है। नाथ सम्प्रदाय के समग्र अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि – "सच्चे अर्थों में शिक्षा वह है, जो सम्पूर्ण विश्व की मानवता को एकता के सूत्र में नाथती अर्थात् पिरोती अथवा बांधती हो तथा जो सभी प्रकार की अज्ञानता का स्थगन करती हो।"

विश्व योग गुरू भारत एवं नाथ सम्प्रदाय– जैसा कि हम सभी जानते हैं कि नाथ सम्प्रदाय को योग सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। आदिनाथ शिव को ही योगमार्ग का प्रथम नाथ कहा जाता है।[29] आदिनाथ शिव से लेकर आदित्यनाथ तक अर्थात् अब तक एक लम्बी योग परम्परा चलती आ रही है, जिससे प्रभावित होकर भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में अभिभाषण प्रस्ताव पेश होता है, जिसके कुछ अंश इस प्रकार है – "योग भारत की प्राचीन परम्परा है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य हैय विचार संयम और स्फूर्ति प्रदान करने वाला है। हमारी बदली हुई जीवन–शैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है तो आयें 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मानने की दिशा में काम करते है।" 11 दिसम्बर 2014 के संयुक्त राष्ट्र संघ में 177 से अधिक देशों के द्वारा 21 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाने का प्रस्ताव पूर्ण बहुमत से पास होता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

21 जून वर्ष का सबसे बड़ा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय के महायोगियों ने योग शिक्षा के क्षेत्र में सुन्दर, सफल एवं कुशल पहल करके भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः वापस दिलाकर एक बार फिर भारत को विश्व योग गुरू बनाकर पूरे विश्व में अपना परचम फहराया है।

निष्कर्ष– शिक्षा, समाज, तथा योग के विभिन्न आयामों के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नाथ सम्प्रदाय की लोक कल्याणकारी शिक्षा एवं योग का भारतीय जनमानस एवं वैश्विक जनसमुदाय पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। महायोगी गोरक्षनाथ ने सम्पूर्ण भारतवर्ष समेत नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों में अपनी शिक्षा तथा योग का व्यापक प्रचार–प्रसार किया।

इसका इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि सम्पूर्ण विश्व में भारी संख्या में लोग उनके अनुयायी बन गये। नेपाल की मुद्रा में गोरक्षनाथ जी के प्रतीक और वहाँ के राजमुकुट में गोरक्ष के पदचिन्ह पाये गये तथा नेपाल के एक जिले नाम ही गोरखा जिला रख दिया गया। वहाँ के लोगों को सम्पूर्ण संसार में गोरखा नाम से ही जाना जाता है। गोरखपुर जनपद का नाम तथा भारत सरकार की सबसे ताकतवर थलसेना की गोरखपुर रेजिमेन्ट जो अपने अदम्य साहस और पराक्रम के लिए जानी जाती है, का नाम गोरखा रेजिमेन्ट गोरखनाथ के नाम पड़ा। यह सब नाथ सम्प्रदाय की शिक्षा के व्यापक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था को विश्व पटल पर पहुँचाने में पूर्णतः सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Thomas, F.W. (1891), 'The History and Prospects of British Education in India', Deignton Bell and Co., London : George Bell and Sons, Page.1.
2. कौशिक, कुंवर बहादुर (2011), 'नाथपंथ का उद्भव', राव, प्रदीप कुमार (प्र0सं0 2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी–19, लक्ष्मी नगर, पिन–110092, पृ0 107.
3. वही।
4. उपाध्याय, नागेन्द्र (1991), 'हिन्दी साहित्य के निर्माता गोरखनाथ', दिल्लीः वेलविश प्रिंटर्स – 110088, पृ0 8.
5. वही।
6. पाण्डेय, एस0के0 (2014), 'प्राचीन भारत', इलाहाबादः नागरी प्रेस, अलोपीबाग, पृ0 240.
7. त्रिपाठी, चन्द्रमौलि (2011), 'नाथ परम्परा में दीक्षा', राव, प्रदीप कुमार (प्र0सं0, 2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी 19, लक्ष्मी नगर, पिन नं. 110092, पृ0 153.
8. सिंह, अनुज प्रताप (वि0सं0 2071), 'गोरक्षनाथ और नाथ सिद्ध', गोरखपुरः महायोगी गुरू गोरक्षनाथ शोध संस्थान, गोरखनाथ मन्दिर, पृ0 290.
9. गुप्त, फूलचन्द्र प्रसाद (2018), 'गोरखवानी अउर भोजपुरी', गोरखपुरः महयोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पिन–273009, पृ0 10.
10. मिश्र, जयशंकर (13वां संस्करण, 2013), 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास', बिहारः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–800016, पृ0 668.
11. शुक्ल एवं त्रिपाठी (2011), 'नाथपंथ का उद्भव और गोरखनाथ', राव, प्रदीप कुमार (प्र0 सं0 2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी 19, लक्ष्मीनगर, पिन–110092, पृ0 114.
12. मिश्रा, नीलम एवं अन्य (सं0 सं0 2019–20), 'महान व्यक्तित्व', कक्षा–6, पाठ–6, पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश शासन, पृ0 24.
13. योगी, आदित्यनाथ (2011), 'गोरखनाथ एवं नाथ संतों का संत साहित्य और समाज पर प्रभाव', राव, प्रदीप कुमार (प्र0सं0 2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी 19, लक्ष्मीनगर, पिन–110092, पृ0 47.
14. श्रीवास्तव, रामलाल (सं0 2026 वि0), 'गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह', गोरखपुरः गोरखनाथ मन्दिर, पृ0 40.
15. गोस्वामी, महेन्द्र (1999), 'गोरख महिमा' गोरखपुरः गोरखनाथ मन्दिर, पृ0 17.
16. पाण्डेय, इन्दु (1911), 'नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन', राव, प्रदीप कुमार (प्र0सं0 2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी 19, लक्ष्मीनगर, पिन–110092, पृ0 170.
17. सिंह, अविनाश प्रताप (2019), 'साधना पथ, स्मारिका', गोरखपुरः महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, प्रताप आश्रम, गोलघर,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गोरखपुर–273001, पृ0 22.

18. विश्वकर्मा, ईश्वरशरण (फरवरी 2018), 'पूर्वांचल की चिंतन परम्परा', राव, राजवन्त, मंथन (2018), गोरखपुरः महोत्सव समिति, गोरखपुर, पिन–273001, पृ0 21.
19. गुप्त, फूलचन्द्र प्रसाद (2018), 'कल्याण और योगवाणी', राव, राजवन्त, मंथन (2018), गोरखपुरः महोत्सव समिति, गोरखपुर, पिन–273001, पृ0 73.
20. सिंह, कमल (प्रं0सं0 1998), 'गोरखनाथ हिन्दी के प्रथम कवि', उत्तर प्रदेशः कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, पिन–251001, पृ0 46.
21. मिश्र, जयशंकर (13वां सं–2013), 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास', बिहारः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–800016, पृ0 668.
22. जुनेजा, वेदप्रकाश (सं0 2042 वि), 'नाथ सम्प्रदाय और साहित्य', गोरखपुरः गोरखनाथ मन्दिर, पृ0 19.
23. राव, प्रदीप कुमार (2019), 'नाथपंथ' गोरखपुरः महायोगी गुरू श्री गोरक्ष शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पिन–273001, पृ0 12.
24. वही, पृ0 12.
25. मिश्र, जयशंकर (13वां संस्करण, 2013), 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास', बिहारः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–800016, पृ0 668–669.
26. वही, पृ0 668–669.
27. राव, प्रदीप कुमार (2019), 'नाथपंथ' गोरखपुरः महायोगी गुरू श्री गोरक्ष शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पिन–273001, पृ0 23.
28. श्रीवास्तव, रामलाल (2019), 'गोरखवाणी', गोरखपुरः गुरू गोरक्षनाथ शोध संस्थान, गोरखपुर मन्दिर, पृ0 13.
29. राव, प्रदीप कुमार (2011), नाथपंथ और भक्ति आन्दोलन, नई दिल्लीः चतुर्व्यूह प्रकाशन, जी 19, लक्ष्मीनगर, पिन–110092, पृ0 53.

*****